'अलविदा'

अलविदा कहने का समय अभी आया नहीं
इतना कोहरा तो पहले कभी छाया नहीं
'नहीं' शब्द से ही जैसे भर गया शब्दकोष मेरा
दिखाई ही न दे रहा आशा का सवेरा

ठेस खाकर, मन में चिंताएं हैं अपार
राह के सुगम बनने न दिखते आसार
पर जब मन इतना विचलित होने लगा ओ मित्र
एक बात, एक सुगबुगाहट सी होने देना मुझे
इससे पहले जीवन का दीपक बुझे
क्योंकि अलविदा कहने का समय अभी आया नहीं
समस्याकोई भी हो, हल उनका छिपा है यहीं–कहीं

हाथ पकड़ लूंगा मैं तुम्हारा अंधेरे में
न जाने दूँगा तुम्हे निराशा के घेरे में
बेबसी कभी कचोटती है अंर्तमन को
शायद यही उत्तर, है, समझा लो मन को
क्योंकि कई लड़ाईयों की जीत तय तो है
पर दुर्गम रास्ते और कठिन लड़ाई का भय तो है

फिर भी कर मन पर विजय
धैर्य और दृढ़ता ही है संजय
शत्रु जो है मन के भीतर

समझा लो मन को
सारथी अपने रथ का बनना होगा
जीवन यात्रा को भरपूर जीना होगा
क्यूंकि
अलविदा कहने का समय आया नहीं